Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)

भाग – 4

भारतीय कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

RAS

भाग-4

भारतीय कला एवं संस्कृति

S.No.	Chapter Name	Page No.

1.	**भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला और मृदभांड**
	• संस्कृति
	• संस्कृति की अवधारणा
	• संस्कृति की विशेषताएँ
	• पाषाण काल
	• हड़प्पा सभ्यता
	  ○ रास्ते
	  ○ घर
	  ○ कुएँ
	• गुफाएं
	  ○ एलोरा गुफाएं, महाराष्ट्र
	  ○ एलीफेंटा गुफाएं
	  ○ बादामी गुफाएं(कर्नाटक)
	• मंदिर वास्तुकला
	  ○ हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना
	  ○ मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग
	  ○ मंदिर वास्तुकला के चरण
	  ○ मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ
	• मंदिरो की नागर शैली
	• मंदिरों की द्रविड शैली
	  ○ नागर एवं द्रविण शैली के मंदिरों में अन्तर
	• पल्लवों की मंदिर वास्तुकला
	  ○ महेंद्र समूह या महेंद्रवर्मन शैली (600-630 ईसवी)
	  ○ नरसिंह वर्मन द्वितीय / राजसिंह शैली
	  ○ नंदीवर्मन शैली
	• नायक शैली के मंदिर
	• बेसर शैली के मंदिर एवं उनकी विशेषताएं
	• चालुक्यों की मंदिर वास्तुकला
	• राष्ट्रकूट शैली के मंदिर
	• होयसल मंदिर
	• विजयनगर मंदिर (14 -16 वी शताब्दी)
	• मंदिर वास्तुकला के पाल और सेन स्कूल
	• भारत में सूर्य मंदिर
	  ○ कोणार्क सूर्य मंदिर
	  ○ मोढेरा सूर्य मंदिर, गुजरात
	  ○ मार्तंड सूर्य मंदिर, कश्मीर
	  ○ दक्षिणार्क मंदिर, गया (बिहार)
	  ○ ब्राह्मण्य देव मंदिर, उन्नाव (मध्य प्रदेश)
	• पहाड़ियों में मंदिर की वास्तुकला
	• जैन मंदिर वास्तुकला
	• भारतीय मंदिर वास्तुकला का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव
		1

	• स्तूप स्थापत्य
	  ○ स्तूपों के भाग
	  ○ स्तूपों के प्रकार
	  ○ स्तूपों का दर्शन
	  ○ स्तूपों का उदभव एवं विकास
	  ○ मौर्यकालीन स्तूप
	  ○ विहार
	  ○ चैत्य
	• मौर्य गुफाएं (तीसरी ईसा पूर्व- पहली ईसवी)
	  ○ बराबर और नागार्जुनी गुफाएँ
	  ○ उदयगिरि और खंडगिरी गुफाएं, ओडिशा
	  ○ नासिक की गुफाएँ
	• मौर्योत्तर गुफाएं (पहली सीई- चौथी सीई)
	  ○ कार्ले गुफाएं
	  ○ जूनागढ़ गुफाएं
	  ○ कन्हेरी की गुफाएँ
	  ○ सित्तनवासल गुफाएँ
	• गुप्त काल की महत्त्वपूर्ण गुफाएँ
	  ○ अजंता की गुफाएँ
	  ○ बाघ की गुफाएँ:
	• राष्ट्रकूट और अन्य (6ठी-15वीं शताब्दी सीई)
	  ○ एलोरा की गुफाएँ
	  ○ एलीफेंटा गुफाएं
	• महलों और किलों की वास्तुकला
	• इंडो इस्लामिक वास्तुकला
	• दिल्ली सल्तनत काल
	  ○ कुव्वत-उल-इस्लामः
	  ○ कुतुबमीनार
	  ○ अढ़ाई दिन का झोंपड़ा
	  ○ सल्तनत कालीन स्थापत्य
	  ○ खिलजी राजवंश
	  ○ अलाई दरवाजाः
	  ○ तुगलककालीन स्थापत्य
	  ○ सैय्यद काल की वास्तुकला
	• प्रांतीय वास्तुकला
	  ○ बंगाल शैली (1203-1573 ई.)
	  ○ जौनपुर शैली (1394-1479 ई.)
	  ○ मालवा स्कूल (1405-1569 ई.)
	  ○ बीजापुर
	  ○ गोलकुंडा
	• मुगल स्थापत्य कला
	  ○ बाबर
	  ○ हुमायूँ
	  ○ शेरशाहकालीन स्थापत्य
	  ○ अकबर कालीन स्थापत्य
	  ○ जहांगीर
	  ○ औरंगजेबकालीन स्थापत्यः
	• उत्तर मुगल क्षेत्रीय वास्तुकला
	• कश्मीर वास्तुकला
	  ○ धज्जी देवारी
	  ○ ताक
	  ○ कश्मीर में मंदिर	

	• इस्लामी शासन के तहत स्थापत्य विकास
	• कश्मीर में उद्यान
	• असम वास्तुकला
	• बांगला वास्तुकला
	• हिंदू-जैन वास्तुकला
	• इस्लामिक दौर
	  o मस्जिद
	  o बंगले
	• डक्कन वास्तुकला
	  o बीदर
	  o गोलकुंडा
	  o अहमदनगर
	• मराठा वास्तुकला
	  o मंदिर वास्तुकला
	  o वाड़ा (महल)
	• राजपूत वास्तुकला
	  o शहर
	  o स्तंभ
	• सिख वास्तुकला
	• औपनिवेशिक वास्तुकला
	  o भारत में औपनिवेशिक वास्तुकला की विशेषताएं
	• इबेरियन/पुर्तगाली वास्तुकला
	  o इबेरियन शैली की विशेषताएं
	  o भारत में इबेरियन वास्तुकला के कुछ उदाहरण
	• गोथिक वास्तुकला
	• इंडो-सरसेनिक शैली
	• फ्रेंच शैली की वास्तुकला
	• नव-रोमन वास्तुकला
	• स्वतंत्रयोत्तर वास्तुकला
	  o ली कार्बुज़ियर
	  o लॉरी बेकर
	  o चार्ल्स कोरिया	

2.	**भारतीय मूर्तिकला और मृदभांड**
	• मूर्तिकला और कलाकृतियाँ
	• मूर्तिकला का विकास
	  o भारतीय मूर्तिकला विकास की समयरेखा
	• सिंधु घाटी सभ्यतामूर्तिकला-
	  o पत्थर की मूर्तियां
	  o कांस्य मूर्तियाँ
	• टेराकोटा की आकृतियाँ
	  o मातृदेवी की मूर्तियाँ
	• मुहरें
	  o पशुपति सील (मुहर)
	• आभूषण
	• मौर्यकालीन मूर्तिकला कला
	  o खंभे
	  o अशोक के शिलालेख
	• मौर्योत्तर काल
	  o मौर्योत्तर काल में मूर्ति कला
	• भारतीय मूर्तिकला के स्कूल
	  o गांधार कला
		50

	○ मथुरा कला)आरंभ पहली सदी ई० में(○ अमरावती मूर्ती कला • सिंधु घाटी सभ्यतामूर्तिकला- ○ गुप्त कालीन मूर्ति कला ○ प्रतिमाशास्त्र में विशेष मुद्राओं का अध्ययन • पाल और चंदेल मूर्तियां ○ पाल मूर्तियां ○ खजुराहो की मूर्तियां • दक्षिण भारत में मूर्तियां ○ पल्लव ○ चोल मूर्तिकला ○ विजयनगर • भारत में महत्वपूर्ण शिलालेख	
3.	**भारत में मृदभांड** ○ मध्यपाषाण मृदभांड ○ नवपाषाण युग ○ सिंधु घाटी सभ्यता के मृदभांड • मृदभांडो का प्रयोग ○ गैरिक मृदभांड ○ कृष्ण लोहित मृद्पात्र ○ काला और लाल मृदभांड वेयर ○ चित्रित धूसर मृदभांड ○ मौर्यकालीन मृद्भांड ○ लाल मार्जित मृद्भांड/ रेड पोलिश्ड वेयर (गुजरात) ○ तुर्क-मुगल काल • ब्लू पॉटरी	**68**
4.	**भारतीय भाषा और साहित्य** • भारत में भाषाएँ • भारत के भाषायी परिवार • हिंद-आर्य भाषा परिवार ○ ओल्ड इंडो-आर्यन ग्रुप ○ मध्य इंडो-आर्यन समूह ○ आधुनिक इंडो-आर्यन समूह • द्रविड़ भाषा परिवार • ऑस्ट्रो-एशियाटिक भाषा परिवार • चीनी तिब्बती भाषा परिवार • भारत की प्राचीन लिपियां ○ कुछ अन्य लिपियाँ • शास्त्रीय भाषा • भारत की आधिकारिक भाषाएं • साहित्य ○ साहित्य का विकास • संस्कृत साहित्य ○ संस्कृत धार्मिक साहित्य ○ संस्कृत महाकाव्य ○ धर्मनिरपेक्ष संस्कृत साहित्य ○ संस्कृत नाटक ○ संस्कृत कविता ○ पाली और प्राकृत साहित्य ○ द्रविड़ साहित्य ○ संगम (तमिल) साहित्य	**71**

	○ कन्नड़ साहित्य ○ तेलुगु साहित्य ○ मलयालम साहित्य • क्षेत्रीय साहित्य ○ बंगाली साहित्य ○ असमिया साहित्य ○ उड़िया साहित्य ○ गुजराती साहित्य ○ राजस्थानी साहित्य ○ सिंधी साहित्य ○ कश्मीरी साहित्य ○ पंजाबी साहित्य ○ मराठी साहित्य • उर्दू साहित्य • फारसी साहित्य • हिंदी साहित्य ○ यात्रा वृतांत • आधुनिक साहित्य • दलित साहित्य	
5.	**ललित कलाऐं : भारतीय चित्रकला** • चित्रों के प्रकार • प्रागैतिहासिक चित्रकला • उत्तर पुरापाषाण काल (40,000-10,000 वर्ष पूर्व) • मध्यपाषाण काल (10,000-4000 ईसा पूर्व) ○ अल्मोड़ा में लख उडियार गुफाएं • पाषाणाकालीन चित्रों की विशेषताए • ताम्रपाषाणकालीन चित्रकला • दक्षिण भारत ○ भीमबेटका • प्राचीन चित्रकला • अजन्ता शैली की प्रमुख विशेषताएँ • एलोरा गुफाएं ○ परिचय ○ विशेषताएँ • बाघ की चित्रकला • अर्मामलई गुफा, वेल्लोर, तमिलनाडु • लेपाक्षी, आंध्र प्रदेश • जोगीमारा गुफा और सीताबेंगरा गुफाएं, छत्तीसगढ़ • रावण छाया, उड़ीसा • बादामी गुफा मंदिर, कर्नाटक ○ परिचय • सित्तनवासल गुफाएँ ○ परिचय ○ विशेषताएँ • तंजौर की चित्रकला ○ परिचय ○ विशेषताएँ • मध्यकालीन / लघु चित्र • अपभ्रंश /गुजरात /चालुक्य चित्र कला • पाल चित्र कला ○ विशेषताएँ	**95**

- सल्तनतकालीन चित्रकला
- मुगल काल
  - विशेषताएँ
- मुगल चित्रकला का विवरण
  - बाबर
  - हुँमायूँ
  - अकबर
  - जहाँगीर कालीन चित्रकला
  - शाहजहाँ कालीन चित्रकला
  - औरंगजेब
- दक्कनी चित्रकला
- चित्रकला के क्षेत्रीय स्कूल
  - राजस्थानी चित्रकला
  - मेवाड़ शैली
  - कोटा-बूंदी शैली
  - जोधपुर / मारवाड़ शैली
  - बीकानेर शैली
  - जयपुर शैली
  - अलवर शैली
  - पहाडी चित्रकला
  - जम्मू या डोगरा स्कूल
- दक्षिण भारतीय शैली
  - तंजावुर शैली
  - मैसूर शैली
- लोक चित्र कला
  - मधुबनी चित्र कला
  - पट्ट चित्र (उड़ीसा)
  - पटुआ
  - कालीघाट
  - पैटकर पेंटिंग
  - कलमकारी
  - वार्ली
  - थांगका पेंटिंग
  - मंजुषा चित्र कला
  - कोहवर और सोहराई चित्र कला
  - फड़ चित्रकला
  - रागमाला चित्रकला
  - सौरा चित्रकला, ओडिशा
  - चेरियाल स्क्रॉल चित्रकला
  - पिथौरा चित्रकला
  - कालमेजुथु
- आधुनिक काल
- पुनर्जागरण एवं बंगाल शैली
- समसामायिक चित्रकला
- प्रमुख आधुनिक चित्रकार
  - अबनीन्द्रनाथ टैगोरः
  - नंदलाल बोसः
  - सारदा उकिल:
  - मुहम्मद अब्दुर रहमान चांगताई :
  - क्षितिंद्रनाथ मजूमदार :
  - ए.के. हलधरः
  - एम.एफ, हुसैनः

	○ अमृता शेरगिल: ○ यामिनी रायः ○ शोभा सिंहः ○ तैय्यब मेहता : • चित्रकला की क्यूबिस्ट शैली	
6.	**भारतीय संगीत** • उत्पति एवं विकास • भारतीय संगीत के घटक • महत्वपूर्ण रागों का परिचय: ○ ताल ○ थाट • संगीत की कुछ महत्वपूर्ण शब्दावलियाँ • भारतीय संगीत का वर्गीकरण • संगीत की शैलियाँ ○ शास्त्रीय शैली ○ हिन्दुस्तान शैली • हिन्दुस्तान संगीत की महत्व पूर्ण गायन शैलियाँ ○ ध्रुपद ○ ख्याल ○ तराना ○ ठुमरी ○ टप्पा ○ गजल ○ दादरा ○ धमार ○ रागसागर ○ भजन ○ कव्वाली • हिंदुस्तानी संगीत घराना • प्रमुख व्यक्ति ○ अमीर खुसरो ○ स्वामी हरिदास ○ तानसेन ○ बैजू बावरा ○ नेमत खां सदारंग ○ विष्णु नारायण भातखण्डे ○ विष्णु दिगंबर पलुस्कर ○ फैयाज खां ○ कुमार गांधर्व ○ पुरंदरदास ○ मुथुस्वामी दीक्षितार ○ श्यामा शास्त्री • कर्नाटक संगीत ○ विकास ○ विशेषता • हिंदुस्तानी और कर्नाटक शैली के बीच समानताएं • लोक संगीत ○ बाउल ○ पांडवानी ○ पनिहारी ○ ओवी	**117**

	○ मांड ○ भगवती • देश की अन्य प्रमुख लोक परंपराएं • शास्त्रीय संगीत और लोक संगीत का मिश्रण (फ्यूज़न संगीत) ○ शबद ○ कव्वाली • उत्पन्न ध्वनि के आधार पर वाद्य यंत्रों की प्रमुख श्रेणियां • अवनद्ध वाद्य • घाना वाद्य / इडियोफ़ोन • सुषिर वाद्य/एयरोफोन- वायु वाद्य यंत्र ○ तत् वाद्य या कॉर्डोफोन- तार वाले वाद्य यंत्र	
7.	**भारतीय नृत्य** • नृत्य की संकल्पना • शास्त्रीय नृत्य • लोक नृत्य • शास्त्रीय नृत्य की विभिन्न शैलियाँ ○ भरतनाट्यम ○ कुचिपुड़ी ○ ओडिसी ○ कथकली ○ मोहिनीअट्टम (केरल) ○ मणिपुरी ○ कथक ○ सत्रीया /सतरिया (असम) ○ यक्षगान • लोक नृत्य ○ प्रमुख क्षेत्रो के प्रमुख नृत्य • प्रसिद्ध नृत्य ○ सामूहिक नृत्य ○ फसल कटाई के नृत्य ○ ऋतु नृत्य ○ मार्शल आर्ट (युद्ध नृत्य) ○ अनुष्ठानिक नृत्य • पारम्परिक नृत्य	**134**
8.	**हिंदी रंगमंच** • नाटक एवं रंगमंच उदभव एवं विकास • प्राचीन भारतीय महत्वपूर्ण नाटकशास्त्र ○ भास (मौर्योत्तर काल) ○ कालिदास ○ शूद्रक ○ विशाखदत्त (गुप्त काल) ○ भवभूति ○ राजशेखर • वर्तमान भारत में परम्परागत नाटक परम्परा ○ लोक रंगमंच ○ मनोरंजन का रंगमंच • दक्षिण भारत के रंगमंच • आधुनिक काल के नाटक/ रंगमंच	**144**

1 CHAPTER भारतीय वास्तुकला, मूर्तिकला और मृदभांड

संस्कृति

- किसी समाज में निहित **उच्चतम मूल्य** की **चेतना**, जिसके अनुसार वह समाज अपने जीवन को ढालता है।
  - संस्कृत भाषा की **धातु 'कृ'** (करना) से बना है, जिसका **अर्थ** है **परिष्कृत स्थिति।**
  - अर्थात् जब **प्रकृत/ कच्चे संसाधन को परिष्कृत** किया जाता है तो वह **संस्कृति** हिस्सा बन जाता है।
  - अंग्रेजी शब्द **'कल्चर'** लैटिन भाषा के **'कल्ट या कल्टस'** से लिया गया है जिसका अर्थ है विकसित या **परिष्कृत करना।**
  - संक्षेप में किसी वस्तु को इस हद तक **संस्कारित और परिष्कृत करना** कि इसका **अंतिम उत्पाद** हमारी **प्रशंसा** और **सम्मान** प्राप्त कर सके।

संस्कृति की अवधारणा

- संस्कृति **जीवन की विधि** है, जो **भोजन** हम खाते हैं, जो **कपड़े** हम पहनते हैं, जो **भाषा** हम बोलते हैं और जिस **भगवान** की हम पूजा करते हैं, ये सभी **संस्कृति** के **पक्ष** है।
- अतः एक **सामाजिक वर्ग** के सदस्य के रूप में **मानवों** की सभी उपलब्धियाँ **संस्कृति** कही जा सकती है, **उदाहरण** कला, संगीत, साहित्य, शिल्पकला, धर्म, दर्शन आदि।
- इस प्रकार संस्कृति, **मानव जनित पर्यावरण** से संबंध रखती है जिसमें सभी **भौतिक और अभौतिक उत्पाद एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी** को **स्थानांतरित** किये जाते हैं।
- संस्कृति, मानव के **शारीरिक** तथा **मानसिक संस्कारों का सूचक** है अर्थात् संस्कृति मानव समाज के संस्कारों का **परिष्कार** और **परिमार्जन** है जो कि एक **सतत प्रक्रिया** है।
- दूसरे शब्दों में मनुष्य के लिए जो **वांछनीय** अर्थात् मंगलमय है वह **संस्कृति का अंग** है।
- संस्कृति का एक अर्थ **अत:करण की शुद्धि** और **सहदयता** भी है

संस्कृति की विशेषताएँ

- संस्कृति हमारी **प्रकृति की अभिव्यक्ति** है।
- यह हमारे **साहित्य** में, **धार्मिक** कार्यों में, **मनोरंजन** एवं आनन्द प्राप्त करने के तरीकों में देखी जा सकती है।
- **भौतिक** एवं **अभौतिक** रूप में संस्कृति **मानव जनित पर्यावरण** से **संबंध** रखती है।
- भौतिक संस्कृति उन विषयों से जुड़ी है जो हमारे **जीवन के भौतिक पक्षों से जुड़ाव** रखती है, जैसे हमारी वेश-भूषा, खान-पान व घरेलू वस्तुएँ आदि।
- **अभौतिक-संस्कृति** का संबंध **विचारों**, **आदर्शों**, **भावनाओं** और **विश्वासों** से है।
- **संस्कृति** एक स्थान से दूसरे स्थान तथा एक देश से दूसरे देश में **बदलती रहती** है।
  - इसका विकास एक **स्थानीय**, **क्षेत्रीय** अथवा **राष्ट्रीय** संदर्भ में विद्यमान **ऐतिहासिक प्रक्रिया** पर आधारित होता है।
  - **उदाहरण -** देश के विभिन्न हिस्सों में अभिवादन की विधियों में, हमारे वस्त्रों में, खाने की आदतों में, सामाजिक एवं धार्मिक रीति रिवाजों और मान्यताओं में भिन्नता है।

- संस्कृति **आंतरिक अनुभूति** से **सम्बद्ध** है जिसमें **मन** और **हदय** की **पवित्रता निहित** है
- इसमें **कला**, **विज्ञान**, **संगीत**, **नृत्य** और **मानव जीवन** की **उच्चतर उपलब्धियाँ** सम्मिलित है, जिन्हें **सांस्कृतिक गतिविधियाँ** कहा जाता है।

पाषाण काल

- भारत में **पाषाणकालीन मानवों द्वारा निर्मित** वास्तुकला का **उदाहरण नहीं** मिलता। महापाषाण काल के **लोगों द्वारा** उनके **कब्रिस्तानों** को **पत्थर** से **सजाने** का उदाहरण मिलता है।
- दक्षिण भारत में इस प्रकार **शवों** को **दफनाने** की **परम्परा लौह युग** के साथ आरंभ हुई।
- महापाषाण कालीन **दफन करने के उदाहरण** बड़ी संख्या में निम्न स्थानों जैसे **महाराष्ट्र** (नागपुर के पास) **कर्नाटक** (मास्की), **आंध्र प्रदेश** (नागार्जुनकोंडा), **तमिलनाडु** (आदिचन्नालुर) तथा **केरल** में पाये गये है।

हड़प्पा सभ्यता

- **पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार** पर, इस **संस्कृति** के फलने-फूलने की **चरम अवस्था 2100 ई.पू. से 1750 ई.पू.** के बीच अनुमानित है।
- मकानों के निर्माण में सामग्री की **उत्कृष्टता** तथा **दुर्ग**, **सभागारों**, अनाज के **गोदामों**, **कार्यशालाओं**, **छात्रावासों**, **बाजारों** आदि की **मौजूदगी** तथा **आधुनिक जल निकास प्रणाली** वाले **भव्य नगरों** के समान वैज्ञानिक **ले-आउट** देखकर यह **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है कि उस काल की **संस्कृति** काफी **समृद्ध** थी।
- **हडप्पा** और **मोहनजोदड़ों** नामक **दोनों राजधानियाँ** उत्तम **नगरविन्यास** का **उदाहरण** हैं। वहाँ के **वास्तु विद्या** आचार्यों ने **दुर्ग** के रूप में उनका **विधान** किया।
- उनके **पुरविन्यास** में **परिखा**, **प्राकार**, **वप्र**, **द्वार**, **अट्टालक**, **महापथ**, **प्रसाद**, **कोष्ठागार**, **सभा**, , **वीथी**, **जलाशय** आदि वास्तु के अनेक स्थल प्राप्त हुए हैं।
- कोट के भीतर **नगर चौड़े महापथों से विभक्त** था जो चतुष्पथों के रूप में एक दूसरे से मिलते थे और फिर उनसे **कम चौड़ी रथ्याओं और वीथियों में बँट** जाते थे और समस्त पुर को कई **चौक** या **मुहल्लों** में **बाँटते** थे।
- पुरनिर्माण के आरम्भ में **वास्तु-विद्याचार्यों** ने उसका जैसा **विन्यास** किया था वह लगभग उसी रूप में एक **सहस्त्र वर्षों के अन्त तक** बना रहा।

रास्ते

- नगर का **मुख्य राजमार्ग 33 फीट चौड़ा** है।
- उस पर कई **गाड़ियाँ एक साथ** चल सकती हैं।
- **कम चौड़ी सड़के** 12 फीट से 9 फीट तक हैं। इसके बाद **4 फुट तक चौड़ी गलियाँ** भी हैं।
- **सड़कों** पर **ईट बिछाकर** उन्हें **पक्की** करने का **रिवाज** नहीं था।
- केवल **बीच** में बहने वाली **नालियों** को **ईंटों** से **पक्की बनाकर** ईटों से ही **ढंकते** थे।

घर

- घर प्रायः **एक सीध में** और **गलियों** की **ओर** बनाए जाते थे। उनकी **माप** प्राय: 27 फुट x 29 फुट या बड़ें घरों की इससे दुगुनी होती थी। उनमें कई **कमरे**, **रसोईघर**, **स्नानघर** और बीच में **आँगन** होता था और वे **दुखण्डे** बनाए जाते थे।
- कमरों में **फर्श पक्के** न थे, **केवल मिट्टी** कूटकर कच्चे रखे जाते थे।
- **स्नान** की **कोठरियों** में **पतली ईंटें** लगाकर फर्श में एकदम ऐसी जुड़ाई करते थे कि एक बूंद भी पानी न भरने पाये।
- मोटी दीवारों में **नल लगाकर नहाने धोने** का **पानी** नीचे उतार कर **सड़क की ओर** नालियों में बहा दिया जाता था। इससे होने वाली **स्वच्छता** जोकि **हड़प्पा संस्कृति** की **विशेषता** थी।
- प्रायः हर अच्छे घर में **मीठे पानी से भरा हुआ कुआँ** था।

कुएँ

- कुएँ के मुँह पर कुछ **ऊँची मुड़ेर** रहती थी जिसकी ऊपरी कोर पर रस्सी आने-जाने के निशान अभी तक बने हैं।
- वास्तुकाला की दृष्टि से **मोहनजोदड़ो** तथा **हड़प्पा** के **बड़े अन्नागार** भी **अद्भुद** है। पहले इसे **स्नानागार** का **ही एक भाग** माना जाता था।
- किन्तु **उत्खनन** के **पश्चात** यह ज्ञात हुआ है कि ये एक **विशाल अन्नागार** के **अवशेष** है।
- स्नानागार के निकट **पश्चिम** में **विद्यमान पक्की ईंटों** के विशाल चबूतरे पर **मोहनजोदड़ो** का **अन्नागार** निर्मित है, जिसकी पूर्व से पश्चिम की **लम्बाई 150 फी**ट तथा उत्तर से दक्षिण की **चौड़ाई 75 फीट** है।

गुफाएं

- मौर्योत्तर काल में **दो प्रकार की शैल गुफाओं का विकास** देखा गया - **चैत्य** और **विहार।**
  - **विहार** का विकास **मौर्य सामाज्य के दौरान** हुआ था जबकि **चैत्य** कक्षों का विकास **मौर्योत्तर काल** के दौरान हुआ।
  - **चैत्य प्रार्थना** के उद्देश्य से बनाया गया एक **आयताकार प्रार्थना कक्ष** होता था जिसके **केंद्र** में **स्तूप** को रखा जाता था तथा **विहारों** का उपयोग **भिक्षुओं के निवास स्थल** के रूप में किया जाता था।
- **उदाहरण**: कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं, उदयगिरी और खंडगिरी की गुफाओं (ओडिशा) को कलिंग राजा खारवेल के द्वारा संरक्षण प्रदान किया गया था। ये हाथीगुंफा अभिलेख के लिए प्रसिद्ध हैं जिसे ब्राह्मी लिपि में उत्कीर्णित किया गया था।

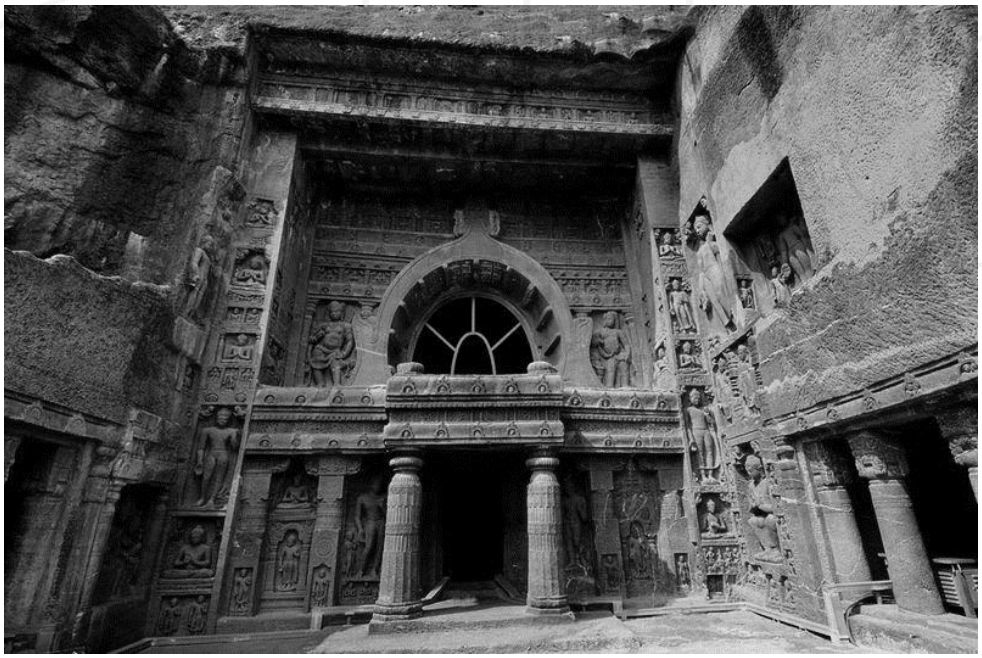

कार्ले का चैत्य, अजंता की गुफाएं अजंता की गुफा की चित्रकारी

- सतवाहन काल के दौरान, इन गुफाओं को **राजकीय संरक्षण** प्राप्त हुआ और ये **अधिक विस्तृत** और **अलंकृत** होते चले गए। द्वारों पर विभिन्न प्रकार के **मिथुन जोड़ों** को **उत्कीर्णित** किया गया। **बहुमंजिला गुफाएं तराशी** जानी शुरू की गई। कार्ले में **दो मंजिला विहार** और **अजंता** में **तीन मंजिला विहार** बनाए गए।

एलोरा गुफाएं, महाराष्ट्र

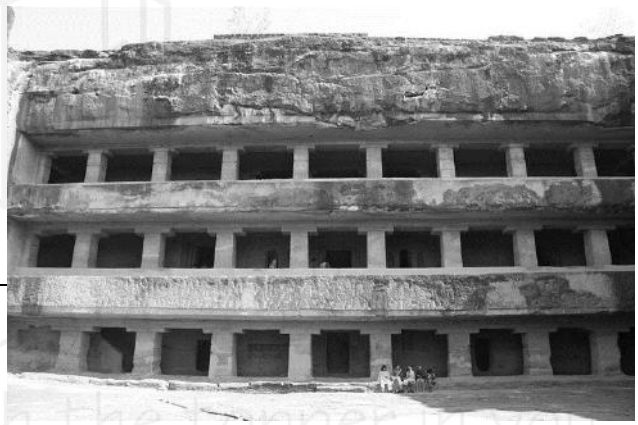

- यह महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में **अजंता** की गुफाओं से **लगभग 100 किलोमीटर दूर स्थित** है।
- **5वीं से 11वीं शताब्दी** के दौरान **निर्मित**
- **यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल।**
- **34 गुफाएं - 1**7 हिंदू धर्म, 12 बौद्ध और 5 जैन।

एलीफेंटा गुफाएं

- मुंबई हार्बर में **एलीफेंटा या श्रीपुरी द्वीप** पर।
- **हाथी** की **विशाल आकृति** को देखकर पुर्तगालियों ने एलीफेंटा नाम दिया। **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **विशाल आकृतियाँ** हैं।

बादामी गुफाएं(कर्नाटक)

- **लाल बलुआ पत्थर** से निर्मित। इन गुफाओं में **तीन ब्राह्मणवादी** और एक **जैन** (पार्श्वनाथ) और एक **प्राकृतिक बौद्ध** गुफा है।
- भित्ति चित्रों में **गुफा चित्रकला** एक महत्वपूर्ण **विशेषता** है। ये **सबसे पहले ज्ञात हिंदू गुफा चित्र** हैं
- जीवित **भित्ति चित्रों** में **शिव** और **पार्वती** शामिल हैं। **पुराणों**, **महाभारत** आदि की **कहानियां चित्रित** हैं
    - गुफा को ,**विष्णु गुफा** के रूप में जाना जाता है क्योंकि गुफाओं में चित्रण **वैष्णव संबद्धता** को **दर्शाता** है
    - **चालुक्य** राजा, **मंगलेश** द्वारा **संरक्षित**
    - **गुफा संख्या 4** में शिलालेख **578-579 सीई** की तारीख का उल्लेख करता है, गुफा की सुंदरता का वर्णन करता है और इसमें **विष्णु** की **छवि** का **समर्पण** शामिल है।

जैन गुफाएँ	बौद्ध गुफाएँ
जैना गुफाओं को बलुआ पत्थर से तराशा गया था (तराशने के लिए आश्न लकिन मूर्तिकला के लिए मुश्किल)।	बौद्ध गुफाओं को कठोर चट्टानों से तराशा गया था (मूर्तिकला के लिए उपयुक्त)।
जैना गुफाओं में कोई सभा कक्ष या पत्थर से तराशे गए धार्मिक स्थल नहीं होते थे।	बौद्ध गुफाओं में सभा कक्ष और धार्मिक क्षेत्र होते थे।
जहाँ भी चट्टानों को काटा जा सकता था, जैन गुफाओं को वहाँ काटकर बनाया गया था, गुफाओं को काटने में कोई योजना नहीं होती थी।	बौद्ध गुफाओं को अच्छी तरीके से योजना बनाकर तराशा गया था।
जैना गुफाओं सरल तरीके से बनी होती थी और उनमे जैन भिक्षुओं के सन्यास की झलक दिखाई देती थी।	बौद्ध गुफाएँ विस्तृत तथा विशाल होती थी।

मंदिर वास्तुकला

- भारत में मंदिर वास्तुकला का विकास **गुप्त युग के दौरान चौथी** से **पांचवीं शताब्दी ईस्वी** में हुआ।
- पहले **हिंदू मंदिर शैल्कर्तित गुफाओं** से बनाए गए थे, जो **बौद्ध संरचनाओं** जैसे स्तूपों से **प्रभावित** थे।
- इस अवधि के दौरान, बड़े पैमाने पर **मुक्त खड़े मंदिरों का निर्माण** किया गया।
- **दशावतार** मंदिर (देवगढ़, झांसी) और **ईंट मंदिर** (भितरगांव, कानपुर) इस अवधि के दौरान बनाए गए मंदिरों के कुछ उदाहरण हैं।
- भारत में हिंदू मंदिरों के **स्थापत्य सिद्धांतों** का **वर्णन शिल्प शास्त्र में** किया गया है जिसमें तीन मुख्य प्रकार के मंदिर वास्तुकला का उल्लेख है - **नागर** शैली, **द्रविड़** शैली और **वेसर** या मिश्रित **शैली।**

हिंदू मंदिर की बुनियादी संरचना

- **गर्भगृह** - **मंदिर का हृदयस्थान**- मंदिर के अंदर मुख्य देवता के लिए बनाया गया है। पहले के दिनों में, इसका एक ही प्रवेश द्वार था जिसमे बाद में कई कक्षों विकसित हुए।
- **मंडप**- यह **मंदिर का प्रवेश द्वार** है जो बहुत बड़ा होता है जिसमें **बड़ी संख्या** में **उपासकों** के लिए **जगह** शामिल है। कुछ मंदिरों में **अर्धमंडप** (मंदिर के बाहर और एक मंडप के बीच एक संक्रमणकालीन क्षेत्र बनाने वाला प्रवेश द्वार) और **महामंडप** (मंदिर में मुख्य सभा हॉल जहां भक्त समारोहों और सामूहिक प्रार्थना के लिए इकट्ठा होते हैं) नामक **विभिन्न आकारों** में कई **मंडप** होते हैं। ये **कुछ** ही **मंदिरों** में **मौजूद** हैं।
- **शिखर/विमान** - यह एक **पर्वत जैसा शिखर** है, जो **उत्तर भारत** में एक **घुमावदार शिखर** और **दक्षिण भारत** में एक **पिरामिडनुमा मीनार** (जिसे विमान कहा जाता है) के **आकार** में है।
- **वाहन-** यह मंदिर के **मुख्य देवता का वाहन** है जिसे **गर्भगृह से पहले** रखा जाता है।
- **अमलक**- पत्थर की एक **डिस्क जैसी** संरचना जो **उत्तर भारतीय शैली** के **शिखर** के **शीर्ष पर** स्थित है।
- **कलश**- **चौड़े मुंह वाला बर्तन** या सजावटी बर्तन-डिजाइन **उत्तर भारतीय मंदिरों में** शिखर को सजाते हैं।
- **अंतराल**- गर्भगृह और मंदिर के मुख्य हॉल (मंडप) के बीच एक **संक्रमण क्षेत्र**
- **जगती**- **बैठने** और **प्रार्थना** करने के लिए एक **ऊंचा मंच** और **उत्तर भारतीय मंदिरों** में **आम** है।

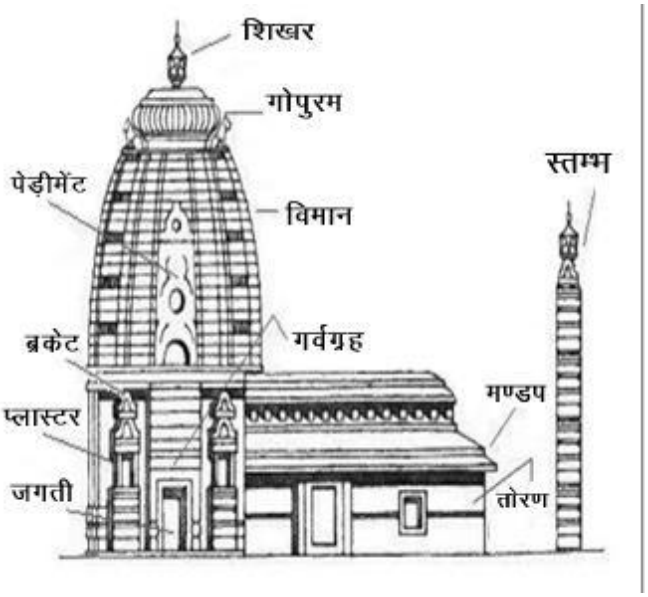

मंदिर स्थापत्य में भग्न ज्यामिति का प्रयोग

- एक योजना की **ज्यामिति एक रेखा से शुरू** होती है जो फिर एक **कोण** बनाती है, फिर **त्रिभुज**, **वर्ग**, **वृत्त** और इसी तरह अंततः **जटिल रूपों** में **परिणत** होती है।
- इस जटिलता का परिणाम **स्व-समानता** होता है ।
- हिंदू मंदिर की योजना **वास्तुपुरुषमंडल** से संबंधित **पुराणों** में **वर्णित सिद्धांतों** का कड़ाई से **पालन** करती है।
- मुख्य रूप से **दो प्रकार के मंडल** होते हैं, एक **चौंसठ वर्गों वाला** होता है और दूसरा **इक्यासी वर्गों वाला** होता है जहाँ प्रत्येक वर्ग **एक देवता को समर्पित** होता है।
- **मुखमंडप**, **अर्धमंडप** और अंत में **महा मंडप** से शुरू होकर, **मूलप्रसाद** आता है, जो **गर्भगृह** को **घेरता** है।
- भग्न का भी **दो आयामों** और **तीन आयामों** दोनों में **मंदिर की ऊंचाई पर** बहुत **प्रभाव** पड़ता है।
- **फ्रैक्टल स्व-समान पसलियों** को बनाकर **अमलाका भाग** में **काम** करता है।

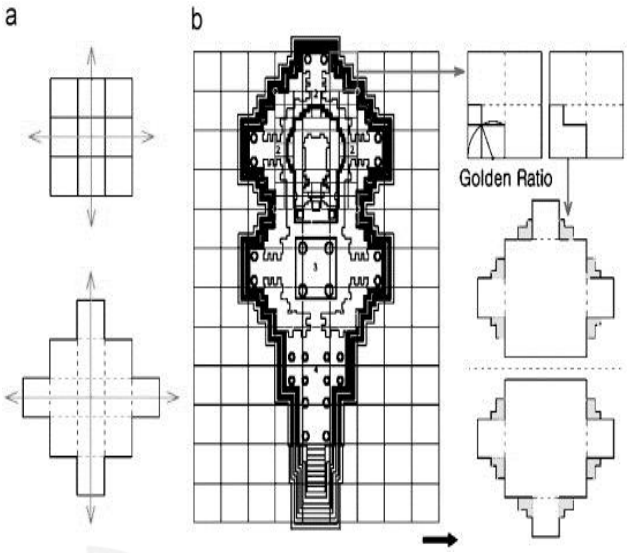

- **भग्न सिद्धांत** "सब के बीच एक, सब एक है" की **हिंदू दार्शनिक अवधारणा** का पूरी तरह से समर्थन करता है। यह "**अराजकता में व्यवस्था**" लाता है और इस प्रकार "**जटिलता में सुंदरता**" लाता है।
- गुजरात के **मोढेरा** में **सूर्य कुंड** भारतीय मंदिरों में **भग्न ज्यामिति** के उपयोग का एक **उत्कृष्ट** उदाहरण है।

मंदिर वास्तुकला के चरण

पहला चरण-

- **चपटी छत** वाला चौकोर आकार का मंदिर
- **उथले स्तंभ** पर निर्मित
- संरचना को **कम ऊंचाई के मंच** पर बनाया गया था
- **गर्भगृह** मंदिर के **केंद्र में** स्थित होता था
- मंदिर का **एक** ही **प्रवेश द्वार**
- **उदाहरण**- एमपी के एरण में विष्णु वराह मंदिर, कंकली मंदिर, तिगवा और मंदिर नं। सांची में 17.

दूसरा चरण-

- **पूर्व चरण** की ही **विशेषताएं**
- **मंच / वेदी** और अधिक **ऊंची**
- **उदाहरण-** नचना कुठार का पार्वती मंदिर

तीसरा चरण-

- सपाट छतों के स्थान पर **शिखर** (घुमावदार टॉवर) **का उद्भव** हुआ।
- "**नागर शैली**" **मंदिर निर्माण** को मंदिर निर्माण के तीसरे चरण की **सफलता** कहा जाता है।
- **पंचायतन शैली** का आरम्भ
- **उदहारण**: देवगढ का दशावतार मंदिर**,** ऐहोल का दुर्गा मंदिर

चौथा चरण-

- **तीसरे चरण** की सभी **विशेषताओं** को इस चरण में **आगे बढ़ाया** गया।
- केवल **मुख्य मंदिर** आकार में अधिक **आयताकार** हो गया।
- **उदाहरण**: महाराष्ट्र तेर मंदिर

पांचवा चरण-

- बाहर की ओर **उथले आयात्कार किनारों वाले वृत्ताकार मंदिरों** का निर्माण
- **पहले** के **चरणों** की सभी **विशेषताएं** जारी रही
- **उदाहरण**:राजगीर का मनियार मठ

मंदिर वास्तुकला की शैलियाँ

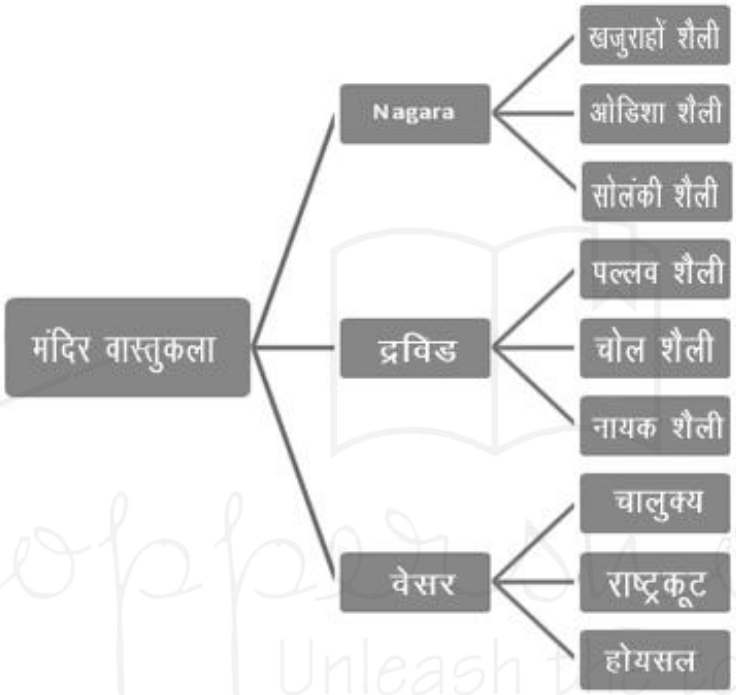

उदभव एवं विकास (100 BC - 1700 / 1800 AD)

नागर शैली	मोर्योत्तर काल → गुप्तकाल→ पूर्वमध्यकाल (100ईसा पूर्व - 300 ईसवी) (319-550 ईसवी) (700-1200 ईसवी)
द्रविण शैली	पल्लव → चोल→ विजयनगर → नायक (7 -9वी सदी) (9-13वी सदी) (14-16वी सदी) (14-18वी सदी)
बेसर शैली	पशिमी चालुक्य → राष्ट्रकट → होयसल (7 -9 वी सदी) (10-12वी सदी) (13-14 सदी)

मंदिरो की नागर शैली

- उत्तर भारत में **हिमालय से विध्य के मध्य** नागर मंदिर मिलते है
- नागर मंदिरों का **निर्माण ऊचे चबूतरे** या **अधिष्ठान** या **जगती** पर किया जाता है।
- इन मंदिरो का **गर्भगृह वर्गाकार** होता है
- **गर्भगृह** के उपर बनी **आकृति शिखर रेखा** या **आर्य शिखर** कहलाती है।

- शिखर को गर्भगृह से उपर की तरफ **वक्राकार** ढंग से बनाया गया है। तथा इसकी **ऊचाई बढ़ती** जाती है।
- इसके लिए **गर्भगृह से चारो तरफ प्रक्षेपण आकृति** निकाले जाते है।
- शिखर के **सर्वोच्च भाग** पर **आमलक** (चक्राकार संस्चना या गतिका परिचायक) एव **कलशा** बना होता है।
- गर्भगृह के **चारो तरफ अंतराल** होता है जिसका प्रयोग **प्रदक्षिणा पथ** के रूप में किया जाता है।
- बड़े नागर मंदिरों में गर्भगृह के सामने अन्य **सहायक संरचनाये** जैसे- महामण्डप, मण्डप, मधमप, नृत्यगंडप आदि वने होते है।
- कुछ स्थानों पर नागर मंदिर **पंचायतन शैली में बने** होते है जिसके तहत **केद्र** में एक **विशाल मंदिर** तथा **चारो कोनों** पर **सहायक देवी देवताओ के मंदिर** बनाए जाते हैं।

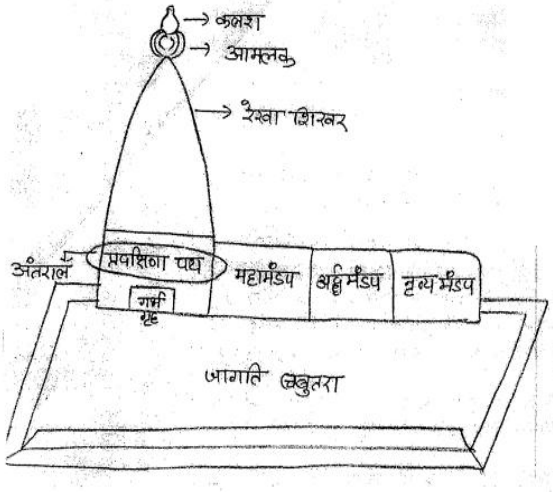

- नागर मंदिरों के **बाहरी भागों** में **आले** (ताखा) **काटकर** अनेक प्रकार की **मूर्तियों** से इन्हें **सजाया** जाता है। इन मूर्तियों में अनेक **देवी देवताओं**, लोकविषयों से संबंधित जैसे **नाग अप्सरा**, **मिथुन**, नृत्य संगीत आदि आम स्त्री पुरुष की **मूर्तिया** बनी होती है। जिन्हें **उत्तर प्रदेश** के देवगढ़ , **कंडरिया महादेव**, **खजुराहों** ,**भुवनेश्वर** आदि मंदिरों में देखा जा सकता है।
- **शिखरों की आकृति के आधार पर** नागर मंदिरों को वर्गीकृत किया जा सकता है-
  - **लैटिना/ रेखाप्रसाद**
    - इसका वर्गाकार आधार होता है।
    - यह **सबसे सरल और सबसे सामान्य प्रकार** है।
    - **ज्यादातर गर्भगृह के लिए इस्तेमाल** किया जाता है।
  - **फमसाना**
    - इसका एक **व्यापक आधार** होता है।
    - लैटिना की तुलना में **ऊंचाई में कम ।**
    - ज्यादातर **मंडप के लिए उपयोग** किया जाता है।
  - **वल्लभी**
    - इसका एक **आयताकार आधार** है
    - छत जो एक **गुंबददार प्रकोष्ट** का निर्माण करती है।
    - **अर्धगोलाकार छतो** के रूप में जाना जाता है।
- **कुछ प्रमुख उदारण**
  - दशावतार मंदिर - देवगढ़ (UP)- विष्णु
  - कंदरिया महादेव - खजुराहो (MP)- शिव
  - लक्ष्मण मंदिर - खजुराहों 'विष्णु
  - लिंगराज मंदिर - भुवनेश्वर -शिव
  - अरसावली मंदिर – आंद्रप्रदेश - सूर्य
- **नागर शैली के अंतर्गत 3 उपशैलियाँ:**
  1. **ओडिशा शैली**
     - मंदिर **शुद्ध नागर शैली का प्रतिनिधित्व** करते हैं।
     - ओडिशा में **कलिंग साम्राज्य** के समय में नागर शैली के अन्तर्गत ही ओडिशा मंदिर स्थापत्य शैली का विकास हुआ, जिसमें अनेक **विशेषताएँ** देखने को मिलती हैं, जैसे-

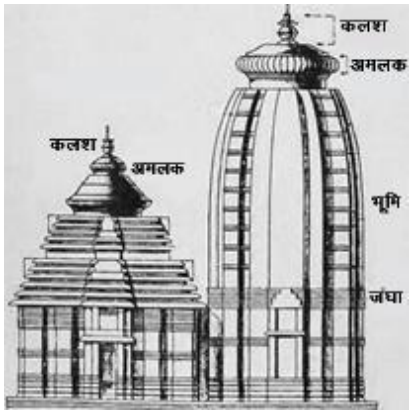

- मंदिर की **बाहरी दीवारों** पर **बारीक नक्काशी** की जाती थी जबकि **भीतरी दीवारें बिना** किसी **नक्काशी** के खाली छोड़ दी जाती थीं।
- **मंदिर की छत को लोहे के गार्डरों से सहारा** दिया जाता था।
- **शिखर** - **रेखा-देउल** जो क्षैतिज आकार में होने के बाद शीर्ष पर एकदम से अन्दर की तरफ मुड़े थे।
- ये मंदिर द्रविड़ शैली के समान ही **परकोटे से घिरे** थे।
- **मंदिर के मंडप** को **जगमोहन** कहा जाता था।

2. खजुराहो शैली

- **मंदिरों** में एक **गर्भगृह**
- एक **छोटा आंतरिक-कक्ष** (अंतराल), एक **अनुप्रस्थ** भाग (**महामण्डप**)
- अतिरिक्त **सभागृह** (अर्ध मंडप)
- एक **मंडप** या बीच का भाग
- एक **बड़ी खिड़कियों** वाला चल मार्ग (**प्रदक्षिणा-पथ**)।
- मंदिरों की **नक्काशी** मुख्य रूप से **हिंदू देवताओं** और **पौराणिक कथाओं** के **संबंध** में है।
- स्थापत्य शैली भी **हिंदू परंपराओं** के **अनुसार** है। इनकी **विभिन्न कारकों** द्वारा **पुष्टि** कि जा सकती है।
- हिंदू मंदिर के निर्माण की एक **प्रमुख विशेषता** यह है कि **मंदिर** का **मुख सूर्योदय** की दिशा की ओर होना चाहिए।

- इसके अलावा, इनकी **नक्काशी** हिंदू धर्म में जीवन के **चार लक्ष्यों** अर्थात, धर्म, काम, अर्थ, मोक्ष को दर्शाती है।
- **मूर्तियों** और **कामुक चित्रों** का समूह **दैनिक जीवन** के **दृश्यों** को **प्रतिनिधित्व** करता है।

3. सोलंकी शैली

- **गुजरात** और **राजस्थान** में निर्मित
- इसके तहत **हिन्दू मंदिरों** के साथ-साथ **जैन मंदिरों** का भी **निर्माण** हुआ।
- **अर्द्ध-गोलाकार पीठ** और **'मंडोवार' गुजरात उपशैली** की पहचान विशेषता हैं।
- वह **अर्द्ध-गोलाकार संरचना** जिसकी वजह से छत-शिखर अलग-अलग दिखता है, उसे **मंडोवार** कहते हैं।
- **उदाहरण:** माउंट आबू का आदिनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालिताना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।

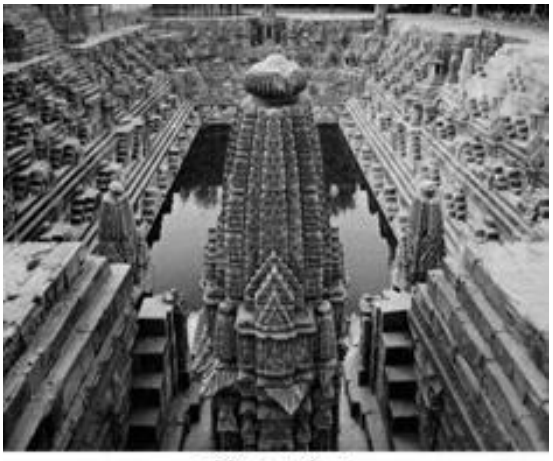
मोढेरा सन टेम्पल

- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में **संगमरमर** के **दो मंदिर** हैं- **दिलवाड़ा** का **जैन** मंदिर तथा **तेजपाल मंदिर** (अर्बुदगिरी के बगल में)।
- कुंभरिया के **पार्श्वनाथ मंदिर** में भी राजस्थान के **मकरान** से **उपलब्ध** काले और सपेद **संगमरमर** का इस्तेमाल किया गया है।
- माउंट आबू के **मंदिरों** का **निर्माण** सोलंकी शासक **भीम सिंह प्रथम** के मंत्री **दंडनायक विमल** ने करवाया था, इसी कारण इसे विमलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर **गुर्जर-प्रतिहारों** की **देन** माना जाता है।

मंदिरों की द्रविड शैली

- विकास - **कृष्णा नदी से कन्याकुमारी** के बीच वर्तमान तमिलनाडु, केरल, निचला आंध्र प्रदेश आदि के मध्य हुआ है।
- द्रविड़ मंदिरों मे **ऊचा चबूतरा नहीं** होता है। यह **मंदिर धरातल** के **निचले हिस्से** से बनना **प्रारंभ** होता है।
- द्रविड़ मंदिरों का **गर्भगृह वर्गाकार** एवं इसके उपर का **शिखर पिरामिडाकार** होता है जो तल्ले के ऊपर तल्ला घटते क्रम में मे बना होता है।
- इसके **ऊचे उठते भाग** को **विमान** कहा जाता है, **शिखर** के **सर्वोच्च भाग** पर **स्तूपिका** नामक **संरचना** बनी होती है।
- गर्भगृह के **चारो ओर अन्तराल** बना होता है जितका **प्रयोग दक्षिणा पथ** के लिए किया जाता है।
- **गर्भगृह** के सामने **बहुसंख्यक स्तंभों** पर टिका **महामण्डप** बना होता है। साथ ही **अन्य सहायक रचनाए** जैसे-अधिमंड़प एवं नदीमण्डप आदि बने होते है।
- **द्रविण मंदिर चारदीवारी** के **भीतर** बने होते है**। मंदिर प्रांगण** में **तालाब** बना होता है। प्रांगण के **भीतर सहायक मंदिर** (देवी-देवता एवं राजा रानियों) के भी बने होते है।
- द्रविण मंदिरों का **प्रवेश द्वार** काफी **भव्य** एवं **विशाल** होता है। जिसे **गोपुरम** कहा जाता है।
- मंदिरों के बाहरी भागो पर **मण्डपो** से लेकर **शिखर** तक **देवी-देवताओं की मूर्तियों** एवं **लोक विषयों** से सम्बंधित **मूर्तियों** का **अरभूत शिल्पांकन** किया जाता है।
- **मंदिर-** वृहदेश्वर एवं मिनाक्षी मंदिर ।

नागर एवं द्रविण शैली के मंदिरों में अन्तर

नागर शैली	द्रविड़ शैली

• **रेखीय शिखर** होता है
• शिखर के **सर्वोच्च भाग पर आमलक** तथा **कलश** जैसी संरचना होती है
• सामान्यतः **ऊचा चबूतरा** बना होता है।
• चारदिवारी तथा प्रांगण के भीतर **तालाब निर्माण आवश्यक नहीं** है।
• **भव्य प्रवेश द्वार** सामान्यतः **नही** बने होते है।
  ○ वास्तुशास्त्र की भाषा में इन्हें **प्रसाद** कहा जाता है।
	• **पिरामिडाकार शिखर** होता है
	• सर्वोच्च भाग पर **स्तूपिका** वनी होती है
	• **ऊचा चबूतरा आवश्यक नहीं** होता है, मंदिर सामान्यतः धरातल से ही बनने प्रारम्भ हो जाते है।
	• **चारदिवारी का निर्माण** तथा **प्रांगन में तलाब** यहां की मुख्य विशेषता है ।
	• **भव्य प्रवेशद्वार** होते है जिसमे **गोपुरम** यहाँ की विशेष परम्परा है।
	  ○ इन्हें **वास्तुशास्त्र में विमान** कहा जाता है।

पल्लवों की मंदिर वास्तुकला

- **मंदिरों के प्रत्यक्ष संरक्षण** की परंपरा पल्लवों के साथ शुरू हुई।
- पल्लव राजा **महेंद्रवर्मन प्रथम** के शासनकाल से, तमिलनाडु में पल्लव कला के **बेहतरीन उदाहरण** जैसे शोर मंदिर और महाबलीपुरम के 7 पैगोडा बनाए गए थे।
- महिषासुरमर्दिनी, गिरि गोवर्धन पैनल, गजलक्ष्मी और अनातसायनम कुछ **शानदार मूर्तियां** हैं जिनका संरक्षण किया गया है।
- पल्लव वास्तुकला **शैलकृत मंदिरों से लेकर शैल निर्मित मंदिरों** तक के संक्रमण को दर्शाती है।

महेंद्र समूह या महेंद्रवर्मन शैली (600-630 ईसवी)

- यह **सबसे प्रारंभिक** शैली थी जिसे मंडप कहा जाता है।
- इसके तहत **पहाडी को सामने की तरफ से काटकर** पिछले भाग में **साधारण कक्ष** (गर्भगृह) एवं **बरामदा** का **निर्माण** किया गया ।
- **गर्भगृह** के **प्रवेश द्वार** पर **द्वारपालों** की **मूर्तिया** तया अनेक **स्तम्भ** बनाए गए।

- उसके तहत **कई मंडपों का निर्माण** किया गया जिसमें **त्रिमूर्ति मंडप**, **पंच पांडव मंडप** (पल्लवरम) तथा **महेन्द्र विष्णु मंडप** आदि मुख्य है।

नरसिंहवर्मन 1 /मामल्ल शैली (मण्डप +रथ)/ नरसिंह समूह

- यह भी **शैलकृत मंदिरों की शैली** है।
- इसके तहत **मन्डपो के साथ रथों का निर्माण** किया गया।
- **मण्डप**
  - कनेरी मंडप
  - आदिवराह मंडप
  - पंचपांडव मण्डप
- **प्रमुख विशेषताए**
  - उस काल में **रथो का निर्माण पहाड़ी को ऊपर से नीचे की तरफ काटकर** किया गया है।
  - ये **रथों के अनुकरण मे** बने है।
  - इन पर **बोद्ध चैत्यो एवं विहारों का भी प्रभाव** है।
  - सभी रथ **एक समान नहीं** है बल्कि ये कई मंजिलों में बने हुए है
  - रथों के **सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका** बनी होती है।
  - **सभी रथ मंदिर महाबलीपुरम** में बने हैं।
  - इनकी संख्या सात है इन्हें **सप्त पैगोडा** भी कहते है।
    1. युधिष्ठीर रथ (सबसे बड़ा)
    2. भीमरथ
    3. अर्जुन रख
    4. नकुल/ सहदेव रथ
    5. द्रोपती रथ ..
    6. गणेश रथ
    7. पिंडारी या वलयकुडी रथ
  - रथ केवल स्थापत्य के ही उदारण नहीं है बल्कि ये **शिल्प कला के भी उत्तम प्रदर्शन** है।

रथ मंदिर महाबलीपुरम

  - इनके बाहरी भागों पर **रामायण, महाभारत** तथा **पौराणिक कथाओं** जैसे अर्जुन की तपस्या ,शिव की किरात ,राम का वनवास आदि का उल्लेख है

नरसिंह वर्मन द्वितीय / राजसिंह शैली

- इस काल में पल्लवों ने **शैलकृत तकनीकी का परित्याग** कर दिया ।
- यहाँ से **संरचनात्मक मंदिर** बनाये जाने लगे।
- जिनका **निर्माण खुले धरातल पर** ईटों एवं पत्थरो पर किया गया।
- राजसिंह शैली की संरचनात्मक मंदिरों की **विशेषताएं** निम्न है
  - वर्गाकार गर्भगृह
  - गर्भगृह के उपर पिरामिडाकार शिखर
  - सर्वोच्च भाग पर स्तूपिका
  - गर्भ गृह के चारो तरफ अन्तराल
  - सामने की तरफ मंडपों का निर्माण
  - मंदिरो के चारो तरफ चहारदिवारी एवं प्रवेश द्वार पर गोपुरम का निर्माण
  - इसके तहत महाबलिपुरम काशोर मंदिर (शिव),कांची का कैलाशनाथ मंदिर एवं बैकुण्ठपेरुमाल मंदिर